

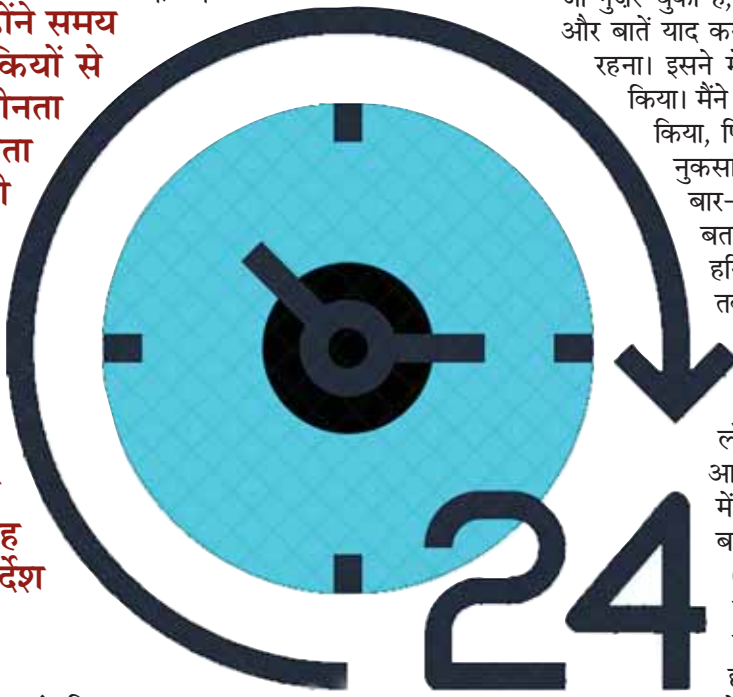
समय को व्यर्थ जाने से कैसे बचायें?

जिसने समय को समझा, उसका जीवन सुलझा

क्या आपके खाते में आता है 86400.... ?

आमतौर पर कोई व्यक्ति कार्य करता है तो देखता है कि इसका लाभ और हानि क्या है। जिसको हम निर्णय कहते हैं। निर्णय में माइंस और प्लस प्वाइंट सोचा जाता है। इसी तरह संगम का भी एक सेकण्ड, एक मिनट व्यर्थ गंवाने से कितना भारी नुकसान है! और फिर यह रिपीट भी होता है, रिकरिंग लॉस (फिर-फिर होने वाला नुकसान)। यह नुकसान ऐसा है जो फिर-फिर होगा। एक दफा गंवा बैठे और आगे चलकर ठीक कर देंगे, ऐसा नहीं। गंवाया सो गंवाया, हर समय गंवाना ही पड़ेगा।

समझदार वो है जिन्होंने समय के गणित को बारीकियों से समझा है। वो उदासीनता के प्रभाव से दूर रहता है। हम दिन में कितनी बार डिप्रेस्ड होते हैं और यूँ ही बेवजह समय बर्बाद करते हैं। भाग्यशाली वह है जिसने अपने जीवन को हर पल जीना सीख लिया है और सौभाग्यशाली वह है जो परमात्मा के निर्देश अनुसार जीते हैं।



वर्तमान समय हमें बहुत अच्छा संग मिला है परमात्मा का, बाप के रूप में, टीचर के रूप में और सद्गुरु के रूप में। वह पारलौकिक बाप हमें पारलौकिक वरसा देने आये हैं। हम कहते थे ना हे प्रभु, आओ हमें सुख, शांति और चैन दो! वो अभी आया है, बड़े प्यार से हमारा मार्ग दर्शन कर रहे हैं... फिर भी हम उस समय को गंवा दें तो क्या कहेंगे! किन-किन बातों में हम अपना समय गंवाते हैं, इस पर चर्चा करेंगे...

प्रभाव और उदासीनता में समय व्यर्थ गंवाना

इसमें है एक तो इम्प्रेसन(प्रभाव), दूसरा डिप्रेसन(उदासीनता)। आज उदासीनता एक विश्व व्यापी बीमारी के रूप में फैल गई है। बहुत लोग ऐसे हैं जो दिन में कई दफा डिप्रेस्ड होते हैं। अभी देखो तो ठीक हैं, खुश हैं, परंतु थोड़े समय के बाद देखें तो डिप्रेस्ड हैं। ऐसा हमसे बार-बार होता है। उसके कई कारण हो सकते हैं। जब व्यक्ति यह सोच लेता है कि मैं किसी काम का नहीं हूँ, मैं बिल्कुल बेकार हूँ, निकम्मा हूँ, वो देखता है कि दूसरा व्यक्ति आगे निकल रहा है, उसकी वाह-वाह हो रही है, उसे कुछ लाभ हो रहा है, मैं क्या कर रहा हूँ! मैं किसी काम का आदमी नहीं हूँ। आम तौर पर उर्दू की चिट्ठी में लिखते थे, नाचीज़। उस समय एक रिवाज जैसा था कि लोग अपने को कहते थे और हम लिखते थे नाचीज़, अर्थात् मैं कोई काम

का नहीं हूँ। नाचीज़ माना मैं कुछ भी नहीं हूँ, दासों का दास हूँ, पांव की धूल हूँ। कई लोग समझते हैं कि ऐसा कहना या लिखना नम्रता है, लेकिन कुछ लोग अपने आप को अनुभव ही ऐसा करते हैं। ऐसे निकृष्ट भावनाओं में चले जाते हैं। भक्ति मार्ग में माया से जो हार हमारी होती है, उसका एक कारण यह भी है कि हम समझ बैठते हैं कि हम तो निकम्मे हैं, किसी काम के नहीं। हे प्रभु, आप ही हमारे ऊपर कृपा करो, हमें छोड़ो, हम तो नीच हैं, पापी हैं। ऐसे खुद को गाली देते हैं। यह हीन भावना की महसूसता है, आत्मविश्वास की कमी है। अब परमात्मा ने आकर इस उल्टे क

सुलटा किया। भगवान कहते हैं, 'मीठे बच्चे, तुम तो इष्ट हो। देखो, तुम्हें आवाज सुनाई नहीं देती! तुम्हारे भक्त तुम्हें याद कर रहे हैं, पुकार रहे हैं, शान्ति देवा... शान्ति देवा... कर रहे हैं। ये आप ही तो थे, जिन्होंने आपको शान्ति दी थी।' भूत और भविष्य तो पुनरावृत्त होता है, तो अब परमात्मा आकर हमें भूत और भविष्य चक्र का सब राज समझाकर कहते हैं कि पहले तुम क्या थे! आप ही सृष्टि के आधार मूर्त, उद्धारमूर्त हो। परमात्मा इस समय, इस तरह हमारे में आत्म विश्वास जागृत करते हैं और उसका विकास करते हैं। लेकिन होता क्या है, हम कोई बात होने पर, कोई परिस्थिति आने पर अपना विश्वास खो बैठते हैं। इस तरह हमारा समय न सिर्फ व्यर्थ होता, किंतु और ही दुःख का गहरा दाग लगाकर उसे भोगते रहते हैं।

किसी भी बात को दबाओ नहीं

रिप्रेशन माना दमना। जो अपने आप काम करते हैं, जो अपने साथ रहते हैं, उन पर सत्ता स्थापित करना, उनको दबा कर रखना, एक प्रकार से उनको गुलाम बनाकर रखना है। लेकिन परमात्मा रहमदिल है, वो आकर बच्चों को कितनी गुलामियों से बचाते हैं। गुलामी कई तरह की है। बीबी को मियाँ की गुलामी, मियाँ को बीबी की गुलामी, बाबा ने हमारे ऊपर कितना उपकार किया, इस गुलामी से बाबा ने मुक्त कर दिया। अगर कोई अपने आप को

कहता है कि मैं ज्ञानी हूँ, ज्ञान में आकर भी किसी पर हुकूम चलाता है, किसी पर बॉस बनकर रहता है, रोब डालता है, उसको डराता है, धमकाता है, बात-बात पर उसको चेतावनी देता है, ललकारता है, तो उसको उसका क्या फल मिलेगा! इस तरह रिप्रेशन में अर्थात् दमन में व्यक्ति का कितना समय खराब होता है। कई तो ऐसा कर्म करने के बाद पछताते भी हैं। मनुष्य को कोई गलत काम करने के बाद उनको अंदर से आवाज आती है कि तुमने यह ठीक नहीं किया। फिर अंदर डिप्रेशन शुरू हो जाता है। हमें इस समय इन चीजों से बाबा ने निकाला है, तो इस समय का फायदा उठाना चाहिए।

रिप्रेशन- बीती बातों का चिंतन करना

रिप्रेशन का अर्थ है-अतीत की बातों को जो गुजर चुकी हैं, उन्हें याद करते रहना और बातें याद कर खुद को ही नकारते रहना। इसने मेरे साथ ये किया, ये किया। मैंने इसके साथ भला काम किया, फिर भी इसने मेरे साथ नुकसान का काम किया। बार-बार खोलकर सारा बतायेंगे। पहले ज़माने में हरिद्वार जाते थे तो मंदिर तक जाने के लिए तांगे में बैठकर जाते थे। अभी तो टैक्सी आदि हैं, तो वहाँ के पण्डे लोग पीछे-पीछे भागकर आते थे और अपनी भाषा में कहते थे, का जात है? बाबूजी, का जात है? (आपकी जाति क्या है?) भई, हमारी जात क्यों पूछते हो? अभी तो हरिद्वार में आये हैं, बैठने तो दो! और वे जात

पूछते हैं, क्योंकि वे आपके बड़े पूर्वजों के जो-जो यहाँ आये थे, उनके नाम बताते हैं। उनके पास सारा रिकॉर्ड होता है। उसी प्रकार ऐसे पुराने बहि-खाते निकालकर, खोल-खोलकर यही बात याद करते रहते कि इसने मुझे बहुत दुःखी किया। बचपन से लेकर मेरे को खा गया। मैं क्या सुनाऊँ आपको, ये कैसे लोग हैं! जिस मुर्दे को दफन कर चुके हो, फिर कब्र तोड़कर मत उखाड़ो। पिछली बातों को याद कर करके अपने मन को खराब करना, क्या ये समझदार का काम है! परंतु परमात्मा ने हमें कितना समझदार बनाया और कहा कि भूलोगे तो भोले बनोगे, भोलेनाथ की संतान बनोगे। भोले बनोगे तो मन में सच्चाई सफाई होगी। यदि आप पुरानी बातों को नहीं भूलोगे तो मन की पवित्रता पूरी तरह से नहीं आयेगी। इसी तरह पूर्व जन्मों की बातें हम लेने लगे तो कहीं न कहीं कड़वापन तो दिखता ही है। तो इसमें समय गंवाना समझदार का काम नहीं है। तो सुबह होते ही परमात्मा हमारी जीवन यात्रा में 86400 सेकण्ड जमा कराता है, पर रात्रि होने तक हम कितना समय व्यर्थ गंवा बैठते हैं! इतने अमूल्य समय में हमारा प्लस और माइंस तो होगा ना! कहते हैं, समय के गणित को जिसने समझ लिया वो सम्पूर्ण जी गया। इस तरह हमें अपने जीवन को अमूल्य बनाने के लिए समय के महत्व को समझना चाहिए। जिसने समय को समझा, उसका जीवन सुलझा।



नेपाल-काठमाण्डू। माननीय राष्ट्रपति विद्या देवी भण्डारी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ है ब्र.कु. मेनुका, ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. तिलक।



लखनऊ-गोमती नगर। राज्यपाल महोदया आनंदी बेन पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा।



भुवनेश्वर-ओडिशा। राज्यपाल महोदय प्रो. गणेशीलाल को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता।



यू.एस.ए.। राल्फ नॉर्दम,गवर्नर,वर्जीनिया,यू.एस.ए. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नागरत्ना,बैंगलूर। साथ है राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय। इस अवसर पर राल्फ नॉर्दम को माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट कम एक्सपो में आने का निमंत्रण भी दिया गया।



कोलकाता। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महोदय जगदीप धनखड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कानन। साथ है प्रथम महिला श्रीमति सुदेश धनखड़, राज्यपाल के संयुक्त सचिव सतीश चन्द्र तिवारी तथा ब्र.कु. अंजली।



राँची-झारखण्ड। राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुर्मू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।